

मज़दूर एकता लहर



हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का अखबार



ग्रंथ-35, अंक - 09

मई 1-15, 2021

पार्श्विक अखबार

कुल पृष्ठ-8

अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर वर्ग दिवस, मई दिवस जिंदाबाद!

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी का आवान, 1 मई, 2021

मज़दूर साथियों,

आज मई दिवस, अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर वर्ग दिवस है। बीते 131 वर्षों से, सारी दुनिया में मज़दूर अपने वर्ग के इस दिवस पर जश्न मनाते आ रहे हैं। हम अपनी जीतों पर खुशियां मनाते हैं और अपनी हारों से सबक लेते हैं, ताकि अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकें। हम अपनी फौरी आर्थिक और राजनीतिक मांगों के लिए संघर्ष करते हैं और साथ-साथ, एक शोषण-दमन से मुक्त, नए समाजवादी समाज का निर्माण करने के अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए भी संघर्ष करते हैं।

अपने देश में यह लगातार दूसरा वर्ष है जब हम मज़दूरों को मई दिवस पर अपनी रैलियां करने से रोका जा रहा है। कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने के नाम पर, केंद्र सरकार ने बीते 14 महीनों से मज़दूरों की सभी रैलियों और विरोध प्रदर्शनों पर रोक लगा रखी है।

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी अपने और दूसरे देशों के मज़दूरों को लाल सलाम करती है, जो इन कठिन हालातों में पूंजीपतियों और उनकी सरकारों के हमलों के खिलाफ जुझारु संघर्ष करते आ रहे हैं।

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी

रेलवे, सड़क परिवहन, कोयला, पेट्रोलियम उद्योग, रक्षा उद्योग, बिजली उत्पादन और वितरण, बैंकिंग और बीमा, आदि के मज़दूरों को सलाम करती है, जो निजीकरण के

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा की व्यवस्था के पूरी तरह फेल हो जाने के लिए, केंद्र सरकार की कड़ी निंदा करती है। हर रोज़

लॉकडाउन की वजह से, करोड़ों फैक्ट्री मज़दूरों, ऑफिस मज़दूरों और निर्माण मज़दूरों को शहरों को छोड़कर गांव वापस जाना पड़ा है। उनके पास अपने और अपने परिवारों के पेट को भरने के कोई साधन नहीं हैं, कमरे का किराया देने का कोई साधन नहीं है। सरकार उनके साथ दूसरी श्रेणी के नागरिक जैसा बर्ताव करती है और उन्हें कोई हक़ नहीं देती है। केंद्र सरकार ने कभी वादा किया था कि सभी मज़दूरों को सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करेगी, परन्तु अब वे सब वादे झूठे साबित हो चुके हैं।

खिलाफ बड़ी बहादुरी से संघर्ष कर रहे हैं।

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी उन लाखों-लाखों किसान बहनों-भाइयों को सलाम करती है, जो बीते 6 महीनों से दिल्ली की सीमाओं पर अपना ऐतिहासिक संघर्ष कर रहे हैं, यह मांग करते हुए कि तीनों किसान-विरोधी कानूनों को रद्द किया जाये और किसानों की रोज़ी-रोटी की सुरक्षा सुनिश्चित की जाये।

हजारों-हजारों लोग मर रहे हैं। एक साल पहले, सरकार ने बड़ी बेरहमी के साथ हमारे ऊपर लॉकडाउन थोप दिया था, इस वादे के साथ कि उस दरमियान सरकार महामारी से निपटने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा में आवश्यक सुधार लायेगी। पर सरकार ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा की समस्याओं को हल करने के लिए कुछ भी नहीं किया। सरकार ने धार्मिक मेलों

में लोगों की भीड़ को इकट्ठा होने की पूरी इजाज़त दी, बड़ी-बड़ी चुनाव रैलियों की इजाज़त दी, जिन सबकी वजह से वायरस का और ज्यादा प्रसार हुआ। इसका परिणाम आज हमारे सामने एक भयानक मानवीय त्रासदी के रूप में खुलकर आ रहा है।

हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी इस महामारी के शिकार बने सभी मृतकों के परिजनों को अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती है। हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी उन सभी नर्सों, डाक्टरों, सफाई कर्मचारियों, एम्बुलेंस ड्राइवरों, आंगनवाड़ी कर्मियों और उन सभी कार्यकर्ताओं को सलाम करती है, जो मानव सेवा के लिए खुद की जान को जोखिम में डाल कर दिन-रात काम कर रहे हैं।

लॉकडाउन की वजह से, करोड़ों फैक्ट्री मज़दूरों, ऑफिस मज़दूरों और निर्माण मज़दूरों को शहरों को छोड़कर गांव वापस जाना पड़ा है। उनके पास अपने और अपने परिवारों के पेट को भरने के कोई साधन नहीं हैं, कमरे का किराया देने का कोई साधन नहीं है। सरकार उनके साथ दूसरी श्रेणी के नागरिक जैसा बर्ताव करती है

शेष पृष्ठ 4 पर

कोरोना वायरस महामारी की तबाही :

सरासर जन-विरोधी व्यवस्था के घातक परिणाम हमारे सामने !

देश में मौजूदा स्वास्थ्य-सेवा व्यवस्था के पूरी तरह से नाकाम और निष्क्रिय होने के बाद पूरे देश में मौत और तबाही ही नज़र आती है।

पिछले कुछ हफ्तों में कोरोना महामारी, जंगल की आग की तरह फैल गई है। हजारों अत्यंत बीमार लोग, जो सांस लेने तक में असमर्थ हैं, उनको उनके निकट संबंधियों और दोस्तों द्वारा अस्पतालों में भरती करने के लिए हर संभव कोशिश की जा रही है। हालत यह है कि अस्पतालों के पास, मरीजों को भरती करने के लिए जगह नहीं बची है। मरीजों को, अस्पतालों के फाटकों पर पहुंचते ही, अन्य अस्पतालों की तलाश करने के लिए कहा जा रहा है। कई लोग तो अस्पताल खोजने की कोशिश में ही मौत का शिकार हो जाते हैं। बहुत से

लोग तो अस्पतालों के बरामदों में ही दम तोड़ने के लिए मजबूर हैं।

हर जगह स्वास्थ्य-सेवाओं की खतरनाक कमी दिखाई दे रही है। अस्पतालों में कोई खाली बिस्तर उपलब्ध नहीं है – न तो आई.सी.यू. बेड मिल रहे हैं न ही ऑक्सीजन के साथ बेड मिल रहे हैं, यहां तक कि साधारण बेड भी उपलब्ध नहीं हैं। डॉक्टरों द्वारा निर्धारित दवाएं, बाज़ार में उपलब्ध नहीं हैं और दूसरी तरफ दवाओं का एक काला बाज़ार चालू है। एम्बुलेंस सेवाओं की भी सख्त कमी है। श्मशान-स्थलों और कब्रिस्तानों में लंबी लाइनें लगी हैं। सामूहिक दाह संस्कार करने के लिए, लोग मजबूर हैं और दिल्ली तथा अन्य शहरों से रिपोर्ट आ रही है कि दाह संस्कार के लिए लोगों को लकड़ी की भी कमी का सामना करना पड़ रहा है। फोन कॉल, सोशल मीडिया पोस्ट और व्हाट्सएप लोगों की विनम्र गुजारिशों से भरे हुए हैं, इस उम्मीद के साथ कि कोई व्यक्ति, उनके गंभीर रूप से बीमार अपने दोस्तों या रिश्तेदारों की मदद कर सकेगा। स्वास्थ्यकर्मी थक गए हैं और अपने को असहाय महसूस कर रहे हैं।

हमारे कस्बों और गांवों में स्वास्थ्य-सेवा व्यवस्था, जो अच्छे समय में भी इतनी दयनीय स्थिति में होती है, अब इस आपातकालीन स्थिति में तो पूरी तरह से ध्वस्त हो गई है।

इस खोफनाक स्थिति के लिए पूरी तरह से, केंद्र सरकार जिम्मेदार है। जब सरकार ने चौदह महीने पहले, मार्च 2020 में लॉकडाउन की घोषणा की थी तो उसके साथ यह भी घोषणा की थी कि वह महामारी से निपटने में सक्षम होने के लिए, एक बेहतर स्वास्थ्य-सेवा व्यवस्था तैयार करना चाहती है। जनवरी 2021 में प्रधानमंत्री मोदी ने दुनिया के अन्य देशों को बताया कि महामारी से कैसे निपटें यह भारत से सीखें।

अपने स्वयं के स्वास्थ्य-सेवा विशेषज्ञों की सिफारिशों में से किसी भी सिफारिश को, हकीकत में सरकार ने लागू नहीं किया है। इन विशेषज्ञ-समितियों ने भविष्यवाणी की थी कि इससे पहले कि इस महामारी का हम कोई इलाज ढूँढ पायें या अधिकांश लोगों को टीका लगाया जा सके, इस महामारी की कई लहरें आएंगी। उन्होंने

एक वर्ष से अधिक समय पहले ही देश में पर्याप्त ऑक्सीजन संयंत्रों की स्थापना की सिफारिश की थी। इसे अमल में लाने के लिए कुछ भी नहीं किया गया।

आज हालत इस हद तक पहुंच गयी है कि हर दिन हमको एक नई अनकही मानवीय पीड़ा और दर्दनाक मौतों की खबरें मिल रही हैं। इस समय जब अस्पतालों में बिस्तर और ऑक्सीजन की आपूर्ति की भारी मात्रा में कमी से हम सब जूझ रहे हैं, निजी अस्पतालों ने इस स्थिति का फ़ायदा उठाकर उन सभी सेवाओं के लिए जिन्हें वे प्रदान करने में सक्षम हैं, उन सेवाओं के लिये मरीजों से अत्यधिक शुल्क वसूलकर,

शेष पृष्ठ 5 पर

अंदर पढ़ें

- ईरान पर इस्लाम का हमला 2
- रेलवे के निजीकरण के खिलाफ़ 3
- किसानों का आंदोलन तेज़ 3
- सिंगल एंड टेलिकॉम के रेल मज़दूरों की परिस्थिति 7

पाठकों को सूचना

प्रिय पाठकों, हमें खेद है कि लाकडॉउन के चलते मज़दूर एकता लहर के इस अंक के प्रकाशन में देरी हो गई है।

ઈરાન કે પરમાણુ સંસાધનોં પર ઇસ્થાઇલ કા હમલા યુદ્ધ કે એક ઐલાન સે કમ નહીં હૈ

11 અપ્રૈલ કો એક વિનાશકારી સાઇબર-હમલે ને ઈરાન કે સબસે બઢે પરમાણુ સંસાધનોં મેં સે એક કો બંદ કરને કે લિએ મજબૂર કર દિયા। ઈરાની સરકાર ને ઇસે “આતંકવાદી હમલા” કહા હૈ ઔર હમલે કે લિએ ઇસ્થાઇલ કો દોષી ઠહરાયા હૈ। હમલે કે કુછ હી ઘંટે બાદ, નટંજ રિએક્ટર કે વૈજ્ઞાનિકોને ઉન્નત યૂરેનિયમ કે ઉત્પાદન મેં તેજી લાને કે ઉદદેશ્ય સે રિએક્ટર કે યૂરેનિયમ સંવર્ધન સંયત્રોં કો ફિર સે શુરૂ કર લિયા।

ઇસ્થાઇલ કે પ્રધાનમંત્રી બેંજામિન નેતેન્યાહૂ ને હમલે કે કુછ ઘંટે બાદ અંતરાષ્ટ્રીય મીડિયા કો એક બયાન દિયા, જિસમે ઉન્હોને કહા કે “ઈરાન ઔર ઉસકે નિકટ સહયોગિયોં કે ખિલાફ ઔર ઈરાની આયુધ પ્રયાસોં કે ખિલાફ સંઘર્ષ, એક બહુત બડા મિશન હૈ”。 હમલે કો વ્યાપક રૂપ સે ઇસ્થાઇલી મીડિયા દ્વારા કવર કિયા ગયા ઔર અધિકારિક રેન્ડિયો મેં યહ દાવા કિયા ગયા કે ઇસ્થાઇલ કી ખુફિયા એજન્સી મોસાદ ને એક સુનિયોજિત તરીકે સે ઇસકો અંજામ દિયા થા।

ઇસસે પહલે ભી નટંજ રિએક્ટર ઇસ્થાઇલ કે હમલોનો કા નિશાના બના રહા હૈ। જુલાઈ 2020 મેં ઇસ્થાઇલ દ્વારા નિશાના બનાકર હમલા કિએ ગયે વિસ્કોટ સે એક યૂરેનિયમ સંવર્ધન સંયંત્ર હો ગયા થા।

2010 મેં સી.આઈ.એ. ઔર મોસાદ દ્વારા સંયુક્ત રૂપ સે આયોજિત એક સાઇબર-અટેક ને, જિસમે સ્ટક્સનેટ નામક એક કંપ્યુટર વાયરસ કા ઉપયોગ કિયા ગયા થા, ઇસસે ઈરાન કે યૂરેનિયમ સંવર્ધન સંયંત્ર કો બહુત બડે પૈમાને પર નુકસાન પહુંચાયા ગયા ઔર ઇસ તરહ સે, ઈરાન કે પરમાણુ કાર્યક્રમ કો કર્ઝ સાલ પીછે ધકેલને કી સાજિશ મેં સફળતા પાયી ગયી। કર્ઝ ઈરાની પરમાણુ વૈજ્ઞાનિકોનો, અમરીકા ઔર ઇસ્થાઇલ કી ખુફિયા એજન્સિયોને

નિશાના બનાયા હૈ ઔર ઉનકી હત્યા કી હૈ। નવ્યંબર 2020 મેં પ્રમુખ ઈરાની પરમાણુ વૈજ્ઞાનિક મોહસિન ફારીરજાદે કી હત્યા ઇસ્થાઇલ દ્વારા આર્ટિફિશિયલ ઇન્ટેલિજન્સ કી તકનીક કા ઉપયોગ કરકે કી ગઈ થી।

ઈરાન કે પરમાણુ સંસાધનોં પર સબસે હાલ કા એક ઔર હમલા એસે સમય પર હુંબા હૈ જબ અમરીકા, ઈરાન, યૂરોપીય સંઘ, બ્રિટેન, ચીન, રૂસ, ફ્રાંસ ઔર જર્મની દ્વારા 2015 મેં હસ્તક્ષરિત પરમાણુ સમજ્ઞાતે કો લેકર હાલ કે દિનોં મેં ઈરાન ઔર અમરીકા કે બીચ વાર્તા ફિર સે શુરૂ હુંબા હૈ। અમરીકા ને 2018 મેં નાજાયજ તરીકે સે ઇસ અન્તરાષ્ટ્રીય સમજ્ઞાતે કો નકાર કર, ઈરાન પર ના પ્રતિબંધ લગાયે થે, જિસકી વજહ સે ઈરાન કે લોગોં કો ભારી પરેશાનિયોં કા સામના કરના પડા હૈ। અમરીકા રાષ્ટ્રપતિ જો-વાઇઝેન કે અપને મુખ્ય ચુનાવી વાદોં મેં સે એક કે રૂપ મેં, ઈરાન કે સાથ ઇસ સમજ્ઞાતે કો ફિર સે લાગુ કરને કા વાયદા ભી થા। ઇસ્થાઇલ, ઈરાન ઔર અમરીકા વ વિશ્વ કી અન્ય શવિત્તયોં કે બીચ એસે સમજ્ઞાતો ઔર ઇન વાર્તાઓં કી બહાલી કે ખિલાફ હૈ। ઇસસે પહલે અપ્રૈલ મેં હુંબા એક બૈઠક મેં, ઇસ્થાઇલ કે પ્રધાનમંત્રી નેતેન્યાહૂ ને બેશર્મી સે કહા થા કે “... ઇસ તરહ કા એક ભી સમજ્ઞાતી હમેં માન્ય નહીં હોગા।”

ઈરાન કે પરમાણુ સંસાધનોં પર હમલે કે તુરંત બાદ, અમરીકી રક્ષા સચિવ, લોયડ ઑસ્ટિન, ઇસ્થાઇલી સરકાર કે સાથ બાતચીત કે લિએ ઇસ્થાઇલ કી રાજધાની તેલ-અવીવ ભી ગએ। પરન્તુ અમરીકી રક્ષા સચિવ ને ઈરાન પર ઇસ્થાઇલી હમલે કી નિંદા નહીં કી।

નટંજ રિએક્ટર પર હમલે સે 5 દિન પહલે ઇસ્થાઇલ ને લાલ સાગર મેં ઈરાન કે લિએ સામાન લે જાને વાલે એક જહાજ પર હમલા કિયા થા। યહ ઈરાની જહાજોને પર ઇસ્થાઇલ દ્વારા એસે હમલોની શ્રુંખલા મેં એક

ઔર હમલા થા। ઇસકે બાદ સીરિયા પર ભી ઇસ્થાઇલી હવાઈ હમલે હુંબા જિસને દમિશક કે પાસ એક સેન્ય અડ્ડે કો ક્ષતિગ્રસ્ત કર દિયા। ઇસ્થાઇલ ને પિછલે સાલ ખુલેઆમ સ્વીકાર કિયા થા કે પિછલે 8 વર્ષોં મેં, ઉસને સીરિયા પર લગભગ 1,000 હવાઈ હમલે કિએ હૈનું।

અમરીકા ઔર ઇસ્થાઇલ, ઈરાન પર લગાતાર કિયે જા રહે અપને હમલોનો ઔર ઈરાન કે ખિલાફ લગાયે ગએ પ્રતિબંધોનો કો સહી ઠહરાને કે લિએ ઇસ ઝૂઠ કા પ્રચાર કરતે આયે હૈનું કે ઈરાન એક “દુષ્ટ રાજ્ય” હૈ જો આતંકવાદ કો આયોજિત કરતા હૈ, હાલાંકિ જીવન કા અનુભવ બતાતા હૈ કે સચ્ચાઈ ઇસકે ઠીક વિપરીત હૈ। તથય બતાતે હૈનું કે ઈરાન નહીં, બલ્લિક અમરીકા ઔર ઇસ્થાઇલ સહિત ઉસકે સહયોગી હી હૈનું, જિનિયા દુનિયા કે અધિકાંશ આતંકવાદી હમલોનો કે પીછે હાથ રહા હૈ।

સશસ્ત્ર આક્રામકતા, નરસંહાર, જાતીય સફાઈ ઔર અપની માતૃભૂમિ સે લગભગ 7,50,000 ફિલિસ્તીની લોગોં કો ક્રૂર વિસ્થાપન કે માધ્યમ સે, 1948 મેં ઇસ્થાઇલ રાજ્ય કી સ્થાપના કી ગઈ થી। યહ રાજ્ય ફિલિસ્તીની લોગોં કે ખિલાફ બર્બર ભેદભાવ ઔર ઉત્પીડન કરતા આયા હૈ ઔર ઇસ ઇસ્થાઇલ રાજ્ય ને ફિલિસ્તીની લોગોં કો ઉનકે માનવ અધિકારોને સે વંચિત કિયા હૈ। ફિલિસ્તીની લોગોં કે અપને રાષ્ટ્રીય અધિકારોને કે લિએ સંઘર્ષ કો “આતંકવાદ” કહકર, ઇસ્થાઇલ, અમરીકા કે પૂરે સમર્થન કે સાથ ફિલિસ્તીની લોગોં કે લગાતાર કલ્લેઆમ કો જાયજ ઠહરાતા હૈ। અમરીકા ઔર ઇસ્થાઇલ, નિયમિત રૂપ સે ઇસ ક્ષેત્ર કે ઉન સભી દેશોને પર ભી સેન્ય હમલે કરતે હૈનું જો અમરીકી સાપ્રાજ્યવાદ કી વિરોધ કરતે હૈનું ઔર જો અપની માતૃભૂમિ કો હાસિલ કરને કે લિએ ફિલિસ્તીની લોગોં કે મૂલભૂત અધિકાર કી હિફાજત કરના ચાહતે હૈનું।

પશ્ચિમ એશિયા પર અપની દાદાગિરી કાયમ રખને કે અપને રણનીતિક ઉદ્દેશ્ય કે સમર્થન મેં, અમરીકા ને શુરૂ સે હી ઇસ્થાઇલી રાજ્ય કો હથિયારબંદ કિયા હૈ, તાકિ વહ ઇસ ક્ષેત્ર મેં અમરીકા કે એક રણનીતિક સહયોગી કે રૂપ મેં કામ કર સકે। તેલ-સમૃદ્ધ પશ્ચિમ એશિયા ક્ષેત્ર પર અપના પૂર્ણ વર્ચસ્વ સ્થાપિત કરને કે લિએ, અમરીકા કી યોજનાઓ મેં ઈરાન એક બહુત બડા રોડા હૈ। યાહી કારણ હૈ કે અમરીકા લગાતાર ઈરાન કો નિશાના બનાતા રહા હૈ। બાહી સાપ્રાજ્યવાદી હસ્તક્ષેપ સે મુક્ત અપને સ્વયં કે આર્થિક ઔર રાજનીતિક કાર્યક્રમ કો આગે બઢાને કે ઈરાન કે મૂલભૂત અધિકાર કે ખિલાફ સંઘર્ષ મેં, અમરીકા કી હર સંભવ કોશિશ રહી હૈ કે વહ ઈરાન કો અપને સામને ઘુટને ટેકને કે લિએ મજબૂર કર સકે। અમરીકા, પશ્ચિમ એશિયા કે રાજ્યોને કે બીચ એક સેન્ય ગઠબંધન બનાને કી ભોશિશ કર રહા હૈ તાકિ વહ ઈરાન પર હમલા કરને સકે।

ઈરાન કે પરમાણુ સંસાધનોં પર ઇસ્થાઇલ કા હમલા યુદ્ધ કા ઐલાન હૈ। ઇસકા ઉદ્દેશ્ય હૈ, ઈરાન કો ભડકાના હૈ ઔર ઈરાન પર આર્

भारतीय ऐल का नियन्त्रण भाग-1 :

भारतीय ऐल के निजीकरण के खिलाफ बढ़ता विरोध

भारतीय रेल हमारे देश की जीवन रेखा है जिसमें हर वर्ष लगभग 800 करोड़ लोग यात्रा करते हैं। चाहे कार्यस्थल हो या फिर गृह नगर या गांव के बीच, करोड़ों मज़दूरों के लिए वह लंबी दूरी की यात्रा का एकमात्र विश्वसनीय और किफायती साधन है। इसके अलावा, इन लाइनों पर हर साल 110 करोड़ टन से अधिक माल का परिवहन भी होता है, जिसमें भोजन से लेकर कोयला तक, सभी कुछ ढोया जाता है। इसका लगभग 68,000 किलोमीटर का रेल मार्ग हमारे विशाल देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ता है। अस्थायी अनुबंधों वाले लगभग 4 लाख श्रमिकों सहित लगभग 16.5 लाख कर्मचारियों के साथ, यह देश का सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का नियोक्ता है। भारतीय रेल का वार्षिक राजस्व 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक है। 165 वर्षों के दौरान, उसके स्वामित्व वाली विशाल भू-संपदा के अलावा, लगभग 6 लाख करोड़ रुपये की संपत्ति का निर्माण सार्वजनिक धन से किया गया है। वास्तव में यह देश की जीवन रेखा होने के साथ-साथ देश के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था और इसके लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बावजूद, देश के लोगों की इस मूल्यवान संपत्ति का निजीकरण देशी और विदेशी इजारेदारों के लाभ के लिए किया जा रहा है। ये इजारेदार भारतीय रेल के लाभदायक परिचालन पर गिर्द की तरह नज़रें गड़ाए हुए हैं।

हिन्दूस्तान और अन्य देशों में इसी तरह के निजीकरण का जीवन—अनुभव यह दर्शाता है कि भारतीय रेल का निजीकरण इसके लाखों कर्मचारियों और करोड़ों रेल यात्रियों के हित में नहीं है।

कामगार एकता कमेटी द्वारा सभा :

सरकार की निजीकरण की नीतियों के खिलाफ सफल संघर्ष

4 अप्रैल, 2021 को रविवार के दिन कामगार एकता कमेटी ने इस महत्वपूर्ण विषय पर इंटरनेट पर मीटिंग का आयोजन किया था। सितम्बर 2020 में कामगार एकता कमेटी द्वारा शुरू की गई “निजीकरण के खिलाफ एक हों!” श्रृंखला की यह 10वीं मीटिंग थी। (इस सभा के तथा पहले की सभाओं की पूरी रिपोर्ट www.hindi.cgpi.org पर पढ़ें)

आमंत्रित वक्ताओं में राष्ट्रीय फड़रेशनों के नेता, भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयों के प्रतिनिधि तथा जन संगठनों के नेता शामिल थे।

ऑल इंडिया पॉवर इंजिनीयर्स फेडरेशन के अध्यक्ष श्री. शैलेन्द्र दूबे ने कहा कि जुलाई 2020 में उत्तर प्रदेश (उ.प्र.) सरकार ने पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम का निगमीकरण करने का निर्णय लिया था। यह एक बहुत बड़ी वितरण कंपनी है, जो उ.प्र. के 75 में से 21 जिलों को बिजली की आपूर्ति करती है। सितम्बर 2020 से ही विद्युत कर्मचारी संयुक्त कृति समिति (वी.के.एस.एस.) के झंडे तले कर्मचारियों ने इसके निजीकरण का विरोध करना शुरू किया था। इस समिति में 18 यूनियनें हैं और चीफ इंजिनीयर

हिन्दौस्तानी मज़दूर वर्ग का सबसे बड़ा संगठित हिस्सा होने के नाते भारतीय रेल के मज़दूरों को न केवल भारतीय रेल के निजीकरण का विरोध करना है, बल्कि अन्य सभी सार्वजनिक क्षेत्रों के उद्यमों के मज़दूर-विरोधी, जन-विरोधी निजीकरण के विरोध को भी नेतृत्व प्रदान करना है।

29 अक्टूबर, 2020 को रेल मजदूरोंने भारतीय रेल के निजीकरण के विरोध हेतु तथा अपनी एकता को मजबूत करने के लिए एक निर्णायक क़दम उठाया, जब उन्होंने राष्ट्रीय रेलवे संघर्ष समन्वय समिति (एन.सी.सी.आर.एस.) को पुनर्गठित करने का निर्णय लिया। भारतीय रेल के निजीकरण की सरकार की योजना का विरोध करने हेतु, देशभर से प्रमुख फेडरेशनों, यूनियनों और श्रेणी-अनुसार एसोसिएशनों – ऑल इंडिया रेलवेमेन फेडरेशन, नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन रेलवेमेन, भारतीय रेल मजदूर संघ, आल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन, ऑल इंडिया गार्ड्स काउंसिल, ऑल इंडिया स्टेशन मास्टर्स एसोसिएशन, ऑल इंडिया ट्रेन कंट्रोलर्स एसोसिएशन, इंडियन रेलवे टिकट चेकिंग स्टाफ ऑर्गनाइजेशन, इंडियन रेलवे सिग्नल एंड टेलीकॉम मेंटेनर्स यूनियन, ऑल इंडिया ट्रैक मेंटेनर्स यूनियन, ऑल इंडिया रेलवेमेन कॉफेडरेशन, इंडियन रेलवे लोको रनिंग मेंस ऑर्गनाइजेशन, रेलवे कर्मचारी ट्रैक मेंटेनर्स एसोसिएशन, दक्षिण रेलवे इंलॉईज यूनियन, इंडियन रेलवे टेक्निकल सुपरवाइजर्स एसोसिएशन, ऑल इंडिया एस.सी. और एस.टी. रेलवे इंलॉईज एसोसिएशन के राष्ट्रीय नेताओं के साथ-साथ कामगार एकता कमेटी (के.ई.सी.) उस दिन एकजुट हो गये। हमें यह याद रखना होगा कि इसी एन.सी.सी.आर.एस. ने 1974 की ऐतिहासिक रेलवे हड्डताल का नेतृत्व किया था।

पुर्नगिरित एन.सी.सी.आर.एस. के सभी घटकों द्वारा संगठन और एकता की आवश्यकता को उस बैठक में स्वीकार गया। अपने सारे मतभेदों के बावजूद वे निजीकरण और निगमीकरण का विरोध करने के लिए एक साथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध थे।

अपने पहले कदम के रूप में, एन.सी.सी.आर.एस. ने संघर्ष को तीव्र और सभी रेल मज़दूरों व उनके परिवारों को एकजुट करने के लिए, "भारतीय रेल के निजीकरण और निगमीकरण के कार्यक्रम को हराने के लिए एकजुट हों" नामक एक पुस्तिका के प्रकाशन का फैसला किया।

सितंबर 2020 से, "निजीकरण के खिलाफ एकजुट हों" विषय की श्रृंखला के अंतर्गत के.इ.सी. मीटिंगों को आयोजित कर रही है! (पिछली बैठकों की रिपोर्ट के लिए www.hindi.cgpi.org को देखिए) सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों और सेवाओं के साथ-साथ लोगों के संगठनों, कार्यकर्ताओं और इच्छुक नागरिकों की बड़ी संख्या के साथ-साथ राष्ट्रीय नेताओं ने इन मीटिंगों में बहुत गंभीरता से भाग लिया है। अब तक आयोजित इन दस मीटिंगों में एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष जो बार-बार उभर कर आया, वह है कि यूनियन और राजनीतिक संबद्धताओं से परे होकर, हमें एक साथ आकर निजीकरण का विरोध करने की ज़रूरत है। बड़े पैमाने पर लोगों को निजीकरण के प्रतिकूल प्रभावों के बारे में शिक्षित करने की भी आवश्यकता है। मज़दूरों, महिलाओं युवाओं, सेवानिवृत्त लोगों और सभी उपभोक्ताओं और उपयोगकर्ताओं के सभी समूहों को संगठित करके, निजीकरण के खिलाफ एक मजबूत आंदोलन शुरू किया जाना चाहिए! कई संगठन जागरूकता फैलाने के लिए पहले से ही सोशल मीडिया

के साथ—साथ समाचार पत्रों का उपयोग करके इस संदेश को प्रचारित करने के लिए काम कर रहे हैं।

2019 में मोदी की अगुवाई वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार के सत्ता में आते ही, उसने भारतीय रेल की विभिन्न इकाइयों को अलग-अलग करके उनके पुर्णगठन लिए 100-दिन की कार्य योजना की घोषणा की। यह कुछ और नहीं बल्कि भारतीय रेल के निजीकरण की योजना थी। पूरे देश में रेल कर्मचारियों ने इस योजना का कड़ा विरोध किया। रेलवे के निजीकरण के खिलाफ संघर्ष में रेल कर्मचारियों की एकता को एक महत्वपूर्ण सफलता तब मिली जब सात यूनियनों और एसोसिएशनों – ऑल इंडिया गार्डर्स काउंसिल (ए.आई.जी.सी.), ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन (ए.आई.एल.आर.एस.ए.), ऑल इंडिया स्टेशन मास्टर्स एसोसिएशन (आई.एस.एम.ए.), ऑल इंडिया रेलवे ट्रैक-मैटेनर्स यूनियन (ए.आई.आर.टी.एम.यू.), ऑल इंडिया ट्रेन कंट्रोलर्स एसोसिएशन (ए.आई.टी.सी.ए.), इंडियन रेलवे टिकट चेकिंग स्टाफ ऑर्गनाइजेशन (आई.आर.टी.सी.एस.ओ.), रेल मजदूर यूनियन (आर.एम.यू.) के साथ-साथ कामगार एकता कमेटी (के.ई.सी.) और लोक राज संगठन (एल.आर.एस.) के एक संयुक्त मंच ने इस योजना का विरोध करने के लिए 2 अगस्त, 2019 को मुंबई में एक बैठक आयोजित की।

भारतीय रेल की सात उत्पादन इकाइयों का निगमीकरण करना सरकार की इस कार्ययोजना का एक हिस्सा था। मज़दूर अपने अनुभव से जानते हैं कि निगमीकरण निजीकरण की दिशा में पहला कदम है। रेल

शेष पृष्ठ 6 पर

मज़दूरों के एकजुट संघर्षी की वजह से वे आगे नहीं बढ़ पाये। एम.ई.सी., सी.ओ.डी., ऑर्डरनेस डिपो, सेना, नौ सेना तथा वायुसेना के सहित 42 आयुध कारखानों में करीबन 3.75 लाख गैर-सैनिक रक्षण मज़दूर हैं। सरकार चाहे कहती हो कि आयुध कारखानों के पास 75,000 करोड़ रुपये की संपत्ति है, लेकिन उसका मूल्य दस गना ज्यादा है।

हिंद खदान मज़दूर फेडरेशन के अध्यक्ष श्री नाथुलाल पांडे का कहना था कि कोलंबिया का सीधा—सीधा निजीकरण नहीं हो रहा है, परंतु वे निजी खदान खोलने की इजाज़त निजी खिलाड़ियों को दे रहे हैं। एच.एम.एस., एटक, सीटू, इंटक तथा बी.एम.एस. से संलग्न कोयला उद्योग की सभी यूनियनों ने 2 से 4 जुलाई, 2020 को कोयला खदान के निजीकरण के खिलाफ़ एक कामयाब हड्डताल की थी।

राय बरेली से मॉडर्न कोच फैक्टरी
 (एम.सी.एफ.) मेन्स यूनियन (ए.आई.
 आई.एफ.) के महासचिव, श्री एल
 एन. पाठक तथा एम.सी.एफ. के रेल
 कोच फैक्टरी मेन्स कांग्रेस (एन.एफ.
 आई.आर.) के अध्यक्ष, श्री नाइब सिंह
 वाराणसी के डीजल लोकोमोटिव वक्स

(डी.एल.डब्ल्यू.) मेन्स यूनियन (ए.आई.
आर.एफ.) के महासचिव, डॉ. प्रदीप
शर्मा तथा इंडियन रेलवेज़ टेक्निकल
सुपरवाईज़र्स एसोसिएशन के सीनियर
ज्वाइंट महासचिव श्री के.वी. रमेश ने
भारतीय रेल की सात उत्पादन इकाइयों
के निगमीकरण को रोकने के लिये
चलाये गये अपने संघर्षों का विवरण
दिया। हर इकाई में लड़ाई का नेतृत्व
करनेवाली संयुक्त कृति समितियों के
झांडे तले सब यूनियनें तथा एसोसिएशनें
एकजुट हुईं। परिजनों को संघर्ष में
जोड़ने की वजह से उनकी ताक़त कई
गुना बढ़ गयी है। निजीकरण के बुरे
प्रभावों के बारे में लोगों को समझाने के
लिए उन्होंने मुहिम चलाई और उनका
समर्थन मांगा। इस विरोध के सामने
सरकार निगमीकरण की अपनी योजना
को लाग करने में असफल रही।

ज्यादातर उत्पादन इकाइयां अपनी क्षमता से ज्यादा उत्पादन कर रही हैं और रेल डिब्बों के तथा इंजनों के मामले में भारतीय रेल को आत्मनिर्भर बनाया है। मिसाल के तौर पर, केवल 1,000 रेल डिब्बों का उत्पादन करने के लिए एस सी

शेष पष्ठ 7 पर

અંતરરાષ્ટ્રીય મજદૂર વર્ગ દિવસ,
મર્ઝ દિવસ જિંદાબાદ!

પૃષ્ઠ 1 કા શેષ

ઔર ઉન્હેં કોઈ હક નહીં દેતી હૈ। કેંદ્ર સરકાર ને કભી વાદ કિયા થા કિ સભી મજદૂરોં કો સામાજિક સુરક્ષા સુનિશ્ચિત કરેગો, પરતુ અબ વે સબ વાદે ઝૂઠે સાખિત હો ચુકે હુંને।

હિન્દોસ્તાન કી કમ્યુનિસ્ટ ગદર પાર્ટી હમારે કરોડોં—કરોડોં “આપ્રાવાસી” કહલાને વાલે મજદૂર ભાઇયોં ઔર બહનોં કે સાથ ઇસ અમાનવીય બર્તાવ કે લિએ કેંદ્ર સરકાર કી કડી સે કડી નિંદા કરતી હૈ।

મજદૂર સાધ્યોં,

ઐસા કહા જાતા હૈ કિ જબ હિન્દોસ્તાન આજાદ હુા થા, તબ હમ, ઇસ દેશ કે લોગ, દેશ કે માલિક બન ગએ થે। પર યા સચ નહીં હૈ। સચ તો યહ હૈ કિ ઇસ દેશ મેં મુટ્ઠીભર અતિ-ધનવાનોં કી હુક્મત ચલતી હૈ। ફેન્ટ્રિયોં, ખદાનોં, બૈંકોં, રેલવે — યાની ઉત્પાદન ઔર વિનિમય કે સભી સાધનોં કે જો માલિક હું ઔર જો ઉન પર નિયંત્રણ કરતે હું, આજ વે હી હિન્દોસ્તાન કે માલિક હું હુકમરાન પૂંજીપતિ વર્ગ હૈ, જિસકી અગુવાઈ કરને વાલે હું ટાટા, અંબાની, બિરલા, અડાની ઔર

યાની હૈ હમારે દેશ કે અધિકતમ મજદૂરોં કી હાલત। મજદૂર બેહદ ગંદગી ઔર ભીડાં-ભાડ વાલી હાલતોં મેં રહને કો મજબૂર હોતે હુંને। મજદૂરોં કે રિહાયશી ઇલાકોં કો તરહ—તરહ કે નામ દિએ જાતે હું — સ્લમ, અનાધિકૃત કોલોની, જ્ઞાગી—જ્ઞાંપડી કોલોની — તાકિ મજદૂરોં કો ખુદ કો હી અપની દુખદ હાલતોં કે લિએ જિસ્મેદાર ઠહરાયા જાયે। હમેં બતાયા જાતા હૈ કિ હમ “અવૈધ” હું, ઇસલિએ હમેં છોટી સે છોટી ચીજ કે લિએ સરકાર કા આભારી હોના ચાહિએ। હમેં પીને, ખાના બનાને યા શૌચાલય જાને કે લિએ પાની નહીં મિલતા હૈ। હમારે બચ્ચે બાલ્ટી લેકર,

હમ આજ ઇસલિએ દુખી હું કયોંકિ હમને પિછલે જન્મ મેં કોઈ પાપ કિયા હોગા। દૂસરી તરફ, હમેં યહ બતાયા જાતા હૈ કિ ટાટા, બિરલા, અંબાની ઔર દૂસરે પૂંજીપતિ મેહનતી લોગ હું જિન્હોને અપને ખૂન—પસીને સે અરબોં રૂપયે કમાએ હું। પરંતુ સચ્ચાઈ ઇસકા ઠીક ઉલ્ટા હૈ।

પૂંજીપતિયોં ને હમારે શ્રમ કા શોષણ કરકે, હમારે કિસાન ભાયોં કો લૂટ કર ઔર હમારે દેશ કે કુદરતી સંસાધનોં કો લૂટ કર, અપની—અપની તિજૌરિયોં મેં ઢેર સારી દૌલત ઇકટ્ટા કર રહી હૈ। સૌ સાલ પહલે, બ્રિટિશ રાજ કે દૌરાન, ઉન્હોને અપને મિલ, ફેન્ટ્રી ઔર ખદાન સ્થાપિત કર રહે

એસા કહા જાતા હૈ કિ જબ હિન્દોસ્તાન આજાદ હુા થા, તબ હમ, ઇસ દેશ કે લોગ, દેશ કે માલિક બન ગએ થે। પર યા સચ નહીં હૈ। સચ તો યહ હૈ કિ ઇસ દેશ મેં મુટ્ઠીભર અતિ-ધનવાનોં કી હુક્મત ચલતી હૈ। ફેન્ટ્રિયોં, ખદાનોં, બૈંકોં, રેલવે — યાની ઉત્પાદન ઔર વિનિમય કે સભી સાધનોં કે જો માલિક હું ઔર જો ઉન પર નિયંત્રણ કરતે હું, આજ વે હી હિન્દોસ્તાન કે માલિક હું હુકમરાન પૂંજીપતિ વર્ગ હૈ, જિસકી અગુવાઈ કરને વાલે હું ટાટા, અંબાની, બિરલા, અડાની ઔર

અન્ય ઇજારેદાર પૂંજીવાદી ઘરાને।

ઘંટોં તક લાઇન મેં લગકર, પાની કે ટેંકર કા ઇંતજાર કરતે હુંને। ઇન હાલતોં મેં જબ રાજ્ય કે અધિકારી લોગોં કો યા નસીહત દેતે હું કિ દો ગજ કી દૂરી બનાયે રહ્યો ઔર બાર—બાર સાબુન સે હાથ ધોતે રહ્યો, તો યા હાથ પર નમક છિડકાને વાલી બાત હૈ। જબ આપકો પાની કે લિએ લાઇન મેં ખડા હોના પડ્યા હૈ, તો આપ દો ગજ કી દૂરી કૈસે બનાયે રહ્યોંને? અપને છોટે સે કમરે મેં સભી પરિવાર વાલોં કે સાથ રહતે હુંને, આપ દો ગજ કી દૂરી કૈસે બનાયે રહ્યોંને?

હર દિન જીને કા સંદર્ભ હું હું જ્યાદાતર મજદૂરોં કે સુબહ યા નહીં માલૂમ હોતા હૈ કિ રાત કો ઉસકે બચ્ચોં કો દો રોટી નસીબ હોય નાની | ઉન્હેં કામ કી તલાશ મેં, ફેન્ટ્રિયોં કે દરવાજે ખટખટાને પડ્યા હુંને યા લેબર માર્કિટ મેં જાકર લેબર ચૌક પર ખડા હોના પડ્યા હુંને।

સરકાર ચાહે કિસી ભી પાર્ટી કી હો, પર મજદૂરોં ઔર કિસાનોં કો ઇસાન નહીં માના જાતા હૈ। સરકારે સિર્ફ પૂંજીપતિ વર્ગ કે હિતોં કી હિફાજત કરને કા કામ

થે। ઉન્હોને કિસાનોં કો જાગીરદારોં ઔર અંગ્રેજોં કો ભારી ટૈક્સ દેને કો મજબૂર કરકે, બર્બાદ કર દિયા થા। કિસાનોં કો નીલ ઔર અફીમ જૈસી ફસ્લોં ઉગાને કો મજબૂર કિયા ગયા। બસ્તીવાદી શાસન કે દૌરાન હિન્દોસ્તાન મેં બાર—બાર અકાલ પડતે થે। ઇન હાલતોં સે તબાહ હોકર, કિસાનોં કો શહરોં મેં જાકર હિન્દોસ્તાની ઔર અંગ્રેજ પૂંજીપતિયોં કે મિલોં ઔર ફેન્ટ્રિયોં મેં કામ કરના પડા। ઉન્હેં બહુત હી કઠિન હાલતોં મેં દિન—રાત કામ કરતા થા ઔર ઉન્કે કોઈ અધિકાર નહીં હોતે થે। હિન્દોસ્તાની ઔર અંગ્રેજ પૂંજીપતિયોં ને બઢે—બડે જર્મિદારોં કે સાથ ગઠબંધન બના લિયે ઔર ઉન્હોને મજદૂરોં—કિસાનોં કા બેરહમ શોષણ કરકે ખૂબ ધન કમાએ।

આજાદી કે સંદર્ભ મેં પૂંજીપતિ વર્ગ ઔર મજદૂર વર્ગ કે અલગ—અલગ ઉદ્દેશ્ય થે। પૂંજીપતિ વર્ગ અંગ્રેજોં કી જગહ કો ખુદ લેકર, ઉસી શોષણ ઔર લૂટ કી વ્યવસ્થા કો બરકરાર રખના ચાહતે થે। મજદૂર વર્ગ ને મજદૂર—કિસાન કા રાજ

ચુનાવ પૂંજીપતિ વર્ગ કે એક હથકંડા માત્ર હૈ, જિસકે સહારે વહ યા ફેસલા કરતા હૈ કિ અગલે કુછ સાલોં કે લિએ સરકાર કે ચલાને કા દાયિત્વ કિસ પાર્ટી કે દિયા જાયેગા। જિસ તરહ કોઈ ફેન્ટ્રી માલિક પૂંજીપતિ અપને કારોબાર કો ઔર બેહતર ચલાને કે લિએ સમય—સમય પર અપને મૈનેજર કો બદલતા હૈ, ઠીક ઉસી તરહ પૂંજીપતિ વર્ગ સરકાર કો ચલાને કા દાયિત્વ ઉસ પાર્ટી કો સૌંપતા હૈ જો સબસે બેહતર તરીકે સે લોગોં કો બુદ્ધ બનાએણી ઔર સાથ હી સાથ, સબસે બેહતર તરીકે સે ઉદારીકરણ, નિજીકરણ ઔર ભૂમંડલીકરણ કે જન—વિરોધી કાર્યક્રમ કો લાગુ કરેણી।

કરતી હુંને। હમારે બચ્ચે ચાહે કુપોષણ કે શિકાર હુંને યા કિસી ઔર બીમારી કે, ચાહે વે જિંદા રહેણે યા મર જાયેં, શિક્ષા પાએં યા ન પાએં, નોકરી પાએં યા ન પાએં, સરકાર કો ઇસકી કોઈ ચિંતા નહીં હુંને।

મજદૂર સાધ્યોં,

હમારે હુકમરાન હમારે દુઃખ—દર્દ કે લિએ હમેં ખુદ કો હી જિસ્મેદાર બતાતે હુંને। બચપન સે હમેં યા હી બતાયા જાતા હૈ કે

લોકતંત્ર કી વ્યવસ્થા સ્થાપિત કી। ઉન્હોને ઉસી ન્યાય વ્યવસ્થા કો બરકરાર રખા, જિસકે અનુસાર મજદૂરોં ઔર કિસાનોં કો હમેશા હી પૂંજીપતિ વર્ગ કી ગુલામી કરતે રહના પડેગા ઔર અગાર વે પ્રતિરોધ કરતે હુંને તો ઉન્હેં અપરાધી માના જ

अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर वर्ग दिवस, मई दिवस जिंदाबाद!

पृष्ठ 4 का शेष

चुनाव पूंजीपति वर्ग का एक हथकंडा मात्र है, जिसके सहारे वह यह फैसला करता है कि अगले कुछ सालों के लिए सरकार को चलाने का दायित्व किस पार्टी को दिया जायेगा। जिस तरह कोई फैक्ट्री मालिक पूंजीपति अपने कारोबार को और बेहतर चलाने के लिए समय—समय पर अपने मैनेजर को बदलता है, ठीक उसी तरह पूंजीपति वर्ग सरकार को चलाने का दायित्व उस पार्टी को सौंपता है जो सबसे बेहतर तरीके से लोगों को बुद्ध बनाएगी और साथ ही साथ, सबसे बेहतर तरीके से उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण के जन—विरोधी कार्यक्रम को लागू करेगी। कांग्रेस पार्टी, भाजपा या कोई और पार्टी, जो भी सरकार को चलाती है, वह सिर्फ पूंजीपतियों की मैनेजमेंट टीम (प्रबंधक दल) है। इसलिए, किसी एक पार्टी को सरकार से हटाकर, किसी दूसरी पार्टी को सरकार में बिठाने से लोगों की हालत नहीं बदलेगी।

शोषण, बेरोज़गारी, असुरक्षा और दुःख—दर्द से भरी इस वर्तमान व्यवस्था को खत्म करने के लिए पूंजीवादी व्यवस्था और पूंजीपति वर्ग की हुकूमत को खत्म करना होगा।

हम मज़दूरों को किसानों के साथ मिलकर, इस देश का मालिक बनने के राजनीतिक लक्ष्य के साथ संघर्ष करना होगा। ऐसा करके ही हम सच्चे माझे

में एक समाजवादी हिन्दोस्तान का निर्माण कर सकेंगे, जिसमें मेहनतकश लोगों का शोषण—दमन नहीं होगा।

मज़दूर साथियों,

हम अपनी सांझी मांगों को लेकर, हाल के सालों में बार—बार विरोध प्रदर्शन और सर्व हिन्द डॉलालों करते आये हैं। बीते लगभग 6 महीनों से किसान तीनों किसान—विरोधी कानूनों को रद्द करने की मांग को लेकर, दिल्ली की सीमाओं पर आंदोलन कर रहे हैं। हमें खुद से यह सवाल पूछना पड़ेगा, कि क्या इन

संसदीय व्यवस्था के अन्दर सीमित रहेगा, तब तक पूंजीपति वर्ग को इनसे कोई ख़तरा नहीं है।

पूंजीपति वर्ग की इस हुकूमत को झकझोरने के लिए, हमें संसदीय पार्टियों द्वारा फैलाये गए भ्रमों को ख़ारिज़ करना होगा। हमारा जो पुराना नारा रहा है, कि “जो सरकार निकम्मी है, वह सरकार बदलनी है!”, उसे छोड़कर अब हमें आगे बढ़ना होगा। मोदी सरकार की जगह पर पूंजीपति वर्ग की किसी और पार्टी की सरकार को लाने से हम मज़दूरों और

हिन्दोस्तान हम मज़दूरों और किसानों का है! हिन्दोस्तान पूंजीपति वर्ग की निजी जागीर नहीं है। परन्तु आज हिन्दोस्तान पूंजीपति वर्ग और उसके साम्राज्यवादी मित्रों के हाथों में है। वे देश को अपनी निजी जागीर की तरह चला रहे हैं। हमें पूंजीवादी व्यवस्था की जगह पर मज़दूरों और किसानों की हुकूमत स्थापित करनी होगी। ऐसा करके ही हम समाज को नयी बुनियादों पर स्थापित कर सकेंगे, ताकि सबकी सुख—सुरक्षा सुनिश्चित हो।

कार्यक्रमों का वास्तव में कोई असर हुआ है? क्या पूंजीपति वर्ग हमारी इन मांगों में से किसी एक मांग को भी मानने को मजबूर हुआ है? नहीं! हमारे तमाम प्रदर्शनों और हड्डालों से पूंजीपति वर्ग को कोई फ़र्क नहीं पड़ा है।

हमारे प्रदर्शनों और हड्डालों का पूंजीपति वर्ग और उनकी सरकार पर कोई असर क्यों नहीं पड़ता? इसका यह कारण है कि जब तक हमारे आंदोलनों और प्रदर्शनों का राजनीतिक मकसद वर्तमान

किसानों की हालत नहीं बदलने वाली है।

हमें उत्पादन के बड़े—बड़े साधनों—फैक्ट्रियों, खदानों, बैंकों, रेलवे, आदि—की मालिकी और नियंत्रण को पूंजीपति वर्ग के हाथों से छीनकर, अपने हाथों में लेने और उन्हें सामाजिक मालिकी व नियंत्रण में लाने के उद्देश्य के साथ, अपने संघर्ष को आगे बढ़ाना होगा। ऐसा करने के लिए हम मज़दूरों को एकजुट राजनीतिक ताकत बनना होगा और किसानों के साथ मजबूत गठबंधन बनाना होगा।

हिन्दोस्तान हम मज़दूरों और किसानों का है! हिन्दोस्तान पूंजीपति वर्ग की निजी जागीर नहीं है। परन्तु आज हिन्दोस्तान पूंजीपति वर्ग और उसके साम्राज्यवादी मित्रों के हाथों में है। वे देश को अपनी निजी जागीर की तरह चला रहे हैं। हमें पूंजीवादी व्यवस्था की जगह पर मज़दूरों और किसानों की हुकूमत स्थापित करनी होगी। ऐसा करके ही हम समाज को नयी बुनियादों पर स्थापित कर सकेंगे, ताकि सबकी सुख—सुरक्षा सुनिश्चित हो।

जब हम हिन्दोस्तान के मालिक बनने के उद्देश्य के साथ अपने संघर्ष को आगे बढ़ाएंगे, तब हम अपनी कुछ फौरी मांगों को भी जीत सकेंगे और निजीकरण, उदारीकरण और भूमंडलीकरण के समाज—विरोधी हमले के खिलाफ संघर्ष को आगे बढ़ा सकेंगे।

मई दिवस 2021 के अवसर पर, हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी मज़दूरों से आहवान करती है कि निजीकरण, उदारीकरण और भूमंडलीकरण के पूंजीवादी कार्यक्रम के खिलाफ और सबके अधिकारों की हिफाज़त में, अपने संघर्ष को तेज़ करें। मज़दूर—किसान एकता मजबूत करें। पूंजीवाद की जगह पर समाजवाद का निर्माण करने के उद्देश्य के साथ अपने संघर्ष को आगे बढ़ायें। एक ऐसी नई व्यवस्था बनाने के लिए संघर्ष करें, जिसमें उत्पादन सामाजिक मालिकी और नियंत्रण में होगा और इंसान द्वारा इंसान के शोषण का कोई आधार नहीं रहेगा।

दुनिया के मज़दूरों एक हो!

मज़दूर—किसान एकता जिंदाबाद!

इंक्लाब जिंदाबाद!

<http://hindi.cgpi.org/20791>

कोटीना वायरस महामारी की तबाही ...

पृष्ठ 1 का शेष

बड़े पैमाने पर पैसा कमा रहे हैं और अन्य कई सामानों की आपूर्ति और अन्य सेवाओं के लिए मरीजों को अस्पताल के बाहर से ख़रीदने पर मरीजों को भारी रकम का भुगतान करने के लिये मजबूर किया जा रहा है। ऑक्सीजन सिलेंडर की आपूर्ति को विभिन्न कंपनियों के लिए एक मुनाफाखोरी के अवैध धंधे में बदल दिया गया है। मरीजों को ऑक्सीजन की ज़रूरी आपूर्ति के लिए भारी रकम का भुगतान करना पड़ रहा है।

इजारेदार पूंजीपतियों, फार्म कंपनियों, निजी अस्पतालों और टीका बनाने वाली कंपनियों के मुनाफों को सुनिश्चित करने और “कुशल प्रबंधन” की एक अंतर्राष्ट्रीय छवि को बनाए रखने में ही, हिन्दोस्तानी राज्य व्यस्त है। सरकार के झूठे प्रचार से लोग परेशान हैं और तंग आ गए हैं लोग अब अधिकारियों पर विश्वास नहीं कर रहे हैं।

अधिकारियों के अपराधों और आधिकारिक चैनलों द्वारा फैलाई जा रही गलत सूचनाओं को उजागर करने के लिए लोगों ने सोशल मीडिया का सहारा लिया है। ऐसा करने के लिए उन्हें अधिकारियों द्वारा सताया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री ने आई.सी.यू. बेड़, ऑक्सीजन और अन्य आपूर्ति की कमी की रिपोर्ट करने वाले अस्पतालों को खुलेआम धमकी दी है कि उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। मरीजों और उनके परिवारों, जिन्होंने चिकित्सा आपूर्ति और सेवाओं में कमी के बारे में सोशल मीडिया पर रिपोर्ट पोस्ट की है उन्हें प्रताड़ित किया गया है और धमकी दी जा रही

है। स्वास्थ्य—सेवा व्यवस्था के पतन और अधिकारियों की उदासीनता के कारण कोविड की दर्दनाक मौतों पर रिपोर्टिंग के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में पत्रकारों को धमकियां दी जा रही हैं।

केंद्र और विभिन्न विपक्ष—शासित राज्य सरकारें, इस भयानक स्थिति के लिए एक दूसरे को दोषी ठहराने में व्यस्त हैं, जबकि उनमें से प्रत्येक अपने स्वयं के अपराधों

कमज़ोर स्वास्थ्य—सेवा व्यवस्था के सामने खड़ी समस्याओं के समाधान के लिए कभी गंभीरता से ध्यान दिया है।

मार्च 2020 में जब कोविड महामारी शुरू हुई थी तो यह स्पष्ट रूप से सामने आया था कि हिन्दोस्तान को ऐसी स्थिति से निपटने के लिए, एक सर्वव्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य—सेवा व्यवस्था को स्थापित करने और मजबूत करने की आवश्यकता है। इस तरह

मार्च 2020 में जब कोविड महामारी शुरू हुई थी तो यह स्पष्ट रूप से सामने आया था कि हिन्दोस्तान को ऐसी स्थिति से निपटने के लिए, एक सर्वव्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य—सेवा व्यवस्था को स्थापित करने और मजबूत करने की आवश्यकता है। इस तरह कोविड की तत्काल आवश्यकता पर केंद्र सरकार ने कभी ध्यान नहीं दिया। हमारे शासक, इस महामारी से लोगों के लिए उत्पन्न एक बहुत ही दुखद स्थिति का फ़ायदा उठाकर बड़े पूंजीवादी घरानों के लिए अधिक से अधिक लाभ सुनिश्चित करने में अधिक रुचि रखते थे, बजाय उन उपायों को लागू करने में जिनसे इस महामारी के विनाशकारी परिणामों से समाज के सभी लोगों की रक्षा की जा सके।

पर पर्दा डालने की कोशिश कर रहा है। अभी दो महीने पहले यही सरकारें खुद को शाबाशी दे रही थीं, इसलिए कि उनके द्वारा उठाये गए कदम बड़े कार्रागर साबित हुए और परिणामस्वरूप उनके राज्यों में, अस्पतालों में मरीजों की संख्या और मौतों की संख्या कम हो गई थी इसलिए इस का श्रेय उनको जाना चाहिए — ऐसा दावा किया जा रहा था। इससे साफ़ पता चलता है कि न तो केंद्र सरकार ने और न ही राज्य सरकारें ने, हमारे देश की

की व्यवस

किसान आंदोलन ने अपना संघर्ष तेज़ किया

किसान आंदोलन ने घोषणा की है कि किसान-विरोधी तीन कानूनों को वापस लेने और सभी फ़सलों के लिए कानूनी न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी के लिए वे अपने आंदोलन को तेज़ करेंगे। उन्होंने फिर से दिल्ली की ओर कूच करने का आहवान किया है – फिर दिल्ली चलो। 20 अप्रैल से ही हजारों किसान अपने गावों से निकलकर फिर से दिल्ली की ओर चल पड़े हैं। 23 अप्रैल को पंजाब गवर्नर्मेंट टीचर्स एसोसिएशन के 100 से भी अधिक शिक्षक टिकरी बॉर्ड पहुंचे।

पंजाब और हरियाणा में रबी की फसल की बुआई के लिए मार्च के अंत और अप्रैल महीने की शुरुआत में कई किसान अपने गांव वापस लौट गए थे। फसल पूरी करने के बाद, ज्यादातर किसान दिल्ली सीमा के सिंधु, टिकरी, गाजीपुर और हरियाणा राजस्थान सीमा के शाहजहांपुर के आंदोलन स्थलों पर लौट रहे हैं।

सरकार और उनके प्रवक्ताओं ने किसान आंदोलन को यह कहकर एक बार फिर बदनाम करने की कोशिश की है कि सीमाओं पर आंदोलन की वजह से हरियाणा और उत्तर प्रदेश से दिल्ली में आने वाले ऑक्सीजन सिलेंडर की डिलीवरी में बाधा उत्पन्न हो रही है। आंदोलन स्थलों को कोविड-19 संक्रमण के संभावित “सुपर-स्प्रेडर्स” (बड़ी संख्या में फैलाने वाले) के रूप में बताकर सरकार



किसानों के जर्थे ने मानसा से टिकरी सीमा की तरफ कूच किया

आंदोलन को तोड़ने की भी धमकी दे रही है। वे देशभर में विशेष रूप से दिल्ली में कोविड-19 के संक्रमण और मौतों के बढ़ते मामले के संबंध में किसान आंदोलन के खिलाफ़ लोगों के मत को भड़काने की कोशिश कर रहे हैं।

किसान आंदोलन ने इन आरोपों को खारिज़ कर दिया है। 24 अप्रैल को दिए गए बयान में, संयुक्त किसान मोर्चे ने कोविड-19 के संक्रमण से पीड़ित और उससे मरने वाले लोगों के परिवारों के प्रति हार्दिक सहानुभूति जताई है। किसानों ने पहले ही दिल्ली सीमा की सड़क का एक हिस्सा आपातकालीन सेवाओं के लिए खोल दिया था। हर एक सीमा पर आपातकालीन

सेवाएं शुरू हैं और किसान स्वयं सेवक यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि मरीजों तक ऑक्सीजन या अन्य आवश्यक वस्तु लेकर जाने वाले वाहनों के यातायात में कोई दिक्कत न आए।

22 अप्रैल को हरियाणा के सरकारी अधिकारियों के साथ हुई एक मीटिंग में निर्णय लिया गया कि सड़क की एक ओर से अब बैरिकेड हटा दिए जाएंगे। हालांकि दिल्ली पुलिस ने अभी तक बैरिकेड नहीं हटाए हैं, फिर भी दिल्ली में आने वाले या दिल्ली से जाने वाले वाहनों को किसान आंदोलन की वजह से कोई दिक्कत नहीं हो रही है। वास्तव में, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के अधिकारी जानबूझकर अस्पतालों

तक ऑक्सीजन सिलिंडर पहुंचाने वाले ट्रकों को लम्बे रास्तों से भेजकर उनके पहुंचने में देरी करवा रहे हैं और फिर किसान आंदोलन को इस देरी के लिए दोषी ठहरा रहे हैं।

किसान आंदोलन में सहभागी सभी आंदोलनकारियों को बढ़ती महामारी के बारे में जागरूकता है और वे सभी ज़रूरी एहतियाती उपायों का पालन कर रहे हैं। सिंधु, गाजीपुर, टिकरी और शाहजहांपुर पर स्वयं सेवक लगातार आंदोलन स्थलों की परिस्थितियों का जायजा ले रहे हैं।

लॉकडाउन होने के बाद से दिल्ली छोड़कर जा रहे मज़दूरों को आनंद विहार बस अड्डे पर किसान खाना दे रहे हैं। वे राजधानी के अस्पतालों में भर्ती मरीजों में खाना और ज़रूरी दवाई का वितरण कर रहे हैं।

किसानों ने आंदोलन के खिलाफ़ लगाए गए झूठे आरोपों को सही तरीके से खारिज़ किया है। उन्होंने बढ़ती महामारी का बहाना लेकर किसान आंदोलन को बदनाम करने की सरकार की सभी कोशिशों की कड़ी निंदा की है। उन्होंने बहुमत से यह घोषणा की है कि, जब तक कृषि कानून वापस नहीं लिए जाते और कानूनी न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित नहीं किया जाता है तब तक उन्हें अपने संघर्ष को जारी रखने की प्रतिज्ञा से कोई नहीं हिला सकता है।

<http://hindi.cgpi.org/20771>

भारतीय रेल का निजीकरण ...

पृष्ठ 3 का शेष

मज़दूरों ने सभी उत्पादन इकाइयों में संयुक्त कार्यवाहियों के माध्यम से सफलतापूर्वक संघर्ष किया और सरकार को निगमीकरण की अपनी योजना को स्थगित करने के लिए मजबूर किया।

100-दिन की योजना की कई सिफारिशों मोदी सरकार द्वारा सितंबर 2014 में गठित बिबेक देवराय कमेटी की रिपोर्ट पर आधारित थीं। इस कमेटी का प्रमुख उद्देश्य भारतीय रेल को कदम-दर-कदम बांटकर निजी संचालकों को सौंपना था, जिसका रेलवे की सभी ट्रेड यूनियनों द्वारा डटकर विरोध किया गया।

निजीकरण के खिलाफ़ रेल मज़दूरों के बढ़ते संघर्ष का समर्थन करने के लिए, हिन्दूस्तान की कम्पनीस्ट ग्रादर पार्टी (सी.जी.पी.आई.) ने मई 2018 में एक पुस्तिका निकाली, जिसका शीर्षक था “भारतीय रेल के निजीकरण को एकजुट होकर हराए” (इस पुस्तिका की हजारों प्रतियां रेल मज़दूरों के बीच वितरित की गई, ताकि उन्हें यह पता चल सके कि भारतीय रेल का निजीकरण किस तरह से वर्षों से कदम-दर-कदम किया जा रहा है और सत्ता में आने वाली हर पार्टी ने उसे आगे बढ़ाया है।

2014 में जब देवराय कमेटी ने पूरे भारतीय रेल के निगमीकरण और निजीकरण की सिफारिश की थी, तब रेल मज़दूरों के मजबूत विरोध से बाध्य होकर तत्कालीन रेल मंत्री, श्री सुरेश प्रभु को यह घोषणा करने के लिए मजबूर होना पड़ा था कि देवराय कमेटी की सिफारिशों को लागू नहीं किया जाएगा। यहीं नहीं, प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी को दिसंबर 2014 में डीजल लोको वर्कर्स (डी.एल.डब्ल्यू), वाराणसी के हजारों

मज़दूरों के सामने घोषणा करनी पड़ी थी कि भारतीय रेल का निजीकरण कभी नहीं किया जाएगा और उन्होंने मज़दूरों को ऐसी “अफवाहों” पर विश्वास न करने के लिए कहा!!

तब से लगातार पिछले कुछ वर्षों में विशेष रूप से जो कुछ सामने आया है, वह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि प्रधानमंत्री और एक के बाद एक रेल मंत्री किस प्रकार झूठ बोलते रहे हैं। उल्टे, भारतीय रेल के निजीकरण को उसके बाद और भी अधिक तेज़ी से आगे बढ़ाया गया है। रेल मंत्रालय ने चुनिदा 109 लाखाधयक मार्गों पर 150 निजी रेलगाड़ियों को चलाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। 109 मार्गों का विश्लेषण यह बताता है कि राजस्व अर्जित करने वाले सभी मार्गों को चुनकर निजी संचालकों को सौंपा जा रहा है और घाटे में चल रहे मार्ग रेलवे के लिए छोड़ दिए गये हैं। बोलीदाताओं की संक्षिप्त सूची तैयार है और अंतिम बोलियां 30 जून, 2021 तक प्राप्त होने की उम्मीद हैं।

पुनर्विकास और आधुनिकीकरण के नाम पर रेलवे स्टेशनों का निजीकरण सक्रिय रूप से शुरू किया गया है। स्टेशनों का प्रबंधन और उसके आसपास की ज़मीन व्यवसायिक विकास हेतु 30 से 60 साल की लीज़ पर सौंपी जा रही है। पहले चरण में 123 स्टेशनों को शामिल किया गया है।

पहले दो स्टेशनों, हबीबगंज (भोपाल), मध्य प्रदेश और गांधीनगर (गुजरात) पर कार्य पहले से ही चरम स्तर पर है। आठ और स्टेशनों के लिए शुरूआती बोलियां प्राप्त हो चुकी हैं। प्रतिष्ठित नई दिल्ली रेलवे स्टेशन और सी.एस.एम.टी., मुंबई स्टेशनों के आसपास की बहुत कीमती अचल संपत्ति के कारण कई पूंजीपतियों की इन दोनों स्टेशनों के निजीकरण में विशेष रुचि है।

2022 में पश्चिमी और पूर्वी डेविलोपर्स

फ्रेट कॉरिडोर के पूरा होते ही उन पर निजी मालगाड़ियों को चलाने की योजना की घोषणा 2021 के केंद्रीय बजट में पहले ही की गई है।

16 मार्च, 2021 को रेलमंत्री ने लोकसभा को सूचित किया कि, “अब तक देशभर में 87 भूमि खंड, 84 रेलवे कॉलोनियों, 4 पहाड़ी क्षेत्र के रेलवे और 3 स्टेडियमों को संपत्ति मुद्रीकरण के लिए चुना गया है।” इसका सरल शब्दों में यह मतलब है कि भारतीय रेल की ये संपत्तियां लाभ कमाने के लिए पूंजीपतियों को लंबे समय के लिये पट्टे पर सौंप दी जाएंगी।

ये सभी तथ्य निर्विवाद रूप से भारतीय रेल के निजीकरण के अथक प्रयासों की तरफ संकेत करते हैं। भारतीय रेल के निजीकरण के कड़े विरोध के कारण, सरकारी प्रवक्ता ने सरकार के इरादों के बारे में झूठ बोलना जारी रखा है। यहां तक कि मार्च 2021 में रेलमंत्री पीयूष गोयल ने लोकसभा में घोषणा की कि, “भारतीय रेल का निजीकरण कभी नहीं किया जाएगा।” यह हर भारतीय की संपत्ति है और ऐसी ही रहेगी और यह हिन्दूस्तान की सरकार के पास ही रहेगी।” जब 100-दिन की कार्य योजना का रेल मज़दूरों द्वारा कड़ा विरोध किया गया था, तब भी उन्होंने जुलाई 2019 में संसद में इसी तरह का बयान दिया गया था।

वर्षों से, अनेक संगठन भारतीय रेल के सुनियोजित निजीकरण के लिए एक मजबूत विरोध खड़ा करने के लिए कार्यरत हैं।

ऑल इंडिया गार्ड्स कार्डिसिल (ए.आई.जी.सी.), ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन (ए.आई.एल.आर.एस.ए.), ऑल इंडिया स्टेशन मास्टर्स एसोसिएशन (ए.आई.एस.ए.ए.), ऑल इंडिया रेलवे ट्रैक मैटेनर्स यूनियन (ए.आई.आर.टी.एम.यू.), मुंबई सर्बन रेलवे पैसेंजर

रेलवे में सिग्नल एंड टेलिकॉम के मज़्दूरों के कार्य की परिस्थिति

आम तौर पर भले ही वे यात्रियों के संपर्क में न आते हों, लेकिन गाड़ियों के संचालन में सिग्नल एंड टेलिकॉम (एस. एंड टी.) के मज़दूरों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। भारतीय रेल का सिग्नल एंड टेलिकॉम विभाग यह सुनिश्चित करता है कि गाड़ियां ठीक समय पर और सकुशल अपने गंतव्य स्थानों पर पहुंचें। यह संचार तंत्र को सुचारू रखने के लिए, उसका रखरखाव करता है। इसमें रेलगाड़ी के कंट्रोलर तथा स्टेशन मास्टर के बीच का संपर्क शामिल है तथा विविध स्टेशनों के बीच का संपर्क भी शामिल है। टेलिकॉम विभाग रेलगाड़ियों की गतिविधियों की सूचनाएं स्टेशनों तक पहुंचाता है। वह रेलगाड़ियों की गतियों का भी नियंत्रण करता है। रेलगाड़ियों का ठीक से परिचालन के लिए इस विभाग का कार्य बहुत आवश्यक है।

टेलिकॉम विभाग रेलवे की सभी हेल्पलाइनों को चलाता है। जो यात्री आरक्षित या अनारक्षित टिकट खरीदता है, उसको यह विभाग इंटरनेट लिंक भेजता है। इसके ऊपर सभी सी.सी.टी.वी. कैमरों की जिम्मेदारी होती है। यह विभाग प्लेटफॉर्म के बारे में, प्लेटफार्म पर डिब्बों के स्थान की सूचनायें, गाड़ी के समय तथा समय सारणी के बारे में भी यात्रियों को सूचनाएं देता है। यह वाईफाई सुविधाओं का प्रबंधन करता है। सामान स्केनर, बेब स्केनर, डिजिटल चार्ट तथा मनोरंजन के लिए लगाये गये डिजिटल बोर्डों का प्रबंधन भी करता है तथा इन सभी का रखरखाव भी टेलिकॉम विभाग खुद करता है।

जैसे भारतीय रेल के अन्य विभागों में होता है, वैसे ही सिर्गनल एंड टेलिकॉम के मज़दूरों से बड़ी बेरहमी से बहुत अधिक काम करवाया जाता है। भारतीय रेल के अनेक महत्वपूर्ण विभागों में मज़दूरों की संख्या बहुत ही कम है। अनेक रिक्त पदों के लिये भर्ती नहीं की जाती है। एस. एंड टी. विभाग में यह इतनी बड़ी समस्या बन गई है कि आप सोच ही नहीं सकते! आज के दिन संपूर्ण भारतीय रेल में ग्रुप-सी में केवल 21,000 तथा ग्रुप-डी में मात्र 20,000 मज़दूर हैं। हालांकि मापदंड-2010 के मुताबिक ग्रुप-सी में करीबन 65,000 तथा ग्रुप-डी में करीबन 58,000 पद मान्य किये गये हैं। इसका मतलब है कि इस विभाग में करीबन 2/3 पद खाली हैं।

कामगार एकता कमेटी द्वारा सभा

पृष्ठ 3 का शेष

एफ. की स्थापना की गयी थी, जबकि वह 1,900 का उत्पादन कर रहा है। फिर उसका निगमीकरण क्यों किया जा रहा है?

लोक राज संगठन की उपाध्यक्षा, संजीवनी जैन ने बताया कि निजीकरण तथा उदारीकरण द्वारा वैश्वीकरण की नीति पूर्णतः जन-विरोधी है और उसे तीस सालों से हर एक सत्ताधारी पार्टी लागू करने पर तुली हुई है। यह नीति देशी विदेशी इजारेदार पूंजीपतियों के हित में है। ज़रूरी है कि शिक्षित लोग इस प्रणालि पर सवालिया निशान खड़ा करें, क्योंकि इसके तहत लोगों के प्रति सत्ताधारियों की कोई भी जवाबदेही नहीं है। और इसीलिए



सिग्नल एंड टेलिकॉम के मज़दूर यूनियन की मीटिंग की तैयारी में (फाइल फोटो)

इसके अलावा सिग्नल टेक्निशियन ग्रेड-1 में 15 प्रतिशत की सीधी भर्ती के लिए 2018 में यूनियनों के ज़ोर देने पर रेलवे बोर्ड ने आदेश पारित किया था, लेकिन आज तक एक पर पर भी भर्ती नहीं हुई है।

प्रशासन इस विभाग में हर साल हजारों पदों को समाप्त कर रहा है। विविध पदों को धीरे-धीरे खारिज किया जा रहा है हालांकि ये कार्य ज़रूरी होते हैं और उनके बिना यह विभाग नहीं चल सकता।

एस. एंड टी. विभाग के मज़दूरों के सामने सबसे बड़ी समस्याओं में एक यह है कि जैसा और विभागों में होता है, इसका बहुत बुरा असर यात्रियों की सुरक्षा पर तथा मज़दूरों के सुख-चैन पर होता है। एच.ओ.ई.आर.-2005 (काम के घंटे तथा विश्राम की छुट्टी से संबंधित नियम) का बार-बार उल्लंघन होता है। इससे मज़दूरों के ऊपर काम का बोझ कई गुना बढ़

जाता है। विभाग में कोई ड्यूटी रोस्टर या काम की सूची नहीं होती है। अगर रात में कोई ख़राबी हो जाती है तो उसे ठीक करने के लिए, जो व्यक्ति पूरे दिन में काम करके थका होता है, जिसने विश्राम के लिये छुट्टी ली होती है या जो पारिवारिक काम में व्यस्त होता है उसे वापस काम पर बुला लिया जाता है।

वर्षों से मज़दूर यह मांग उठाते आ रहे हैं कि रात में हुई ख़राबी का सुधार करने के लिये एक हर यूनिट में समूहों की स्थापना करनी चाहिए, जो नजदीक के 4-5 स्टेशनों पर होने वाली ख़राबी को रात में ठीक कर पाए। पूरे दिन काम करके थके हुए या नींदग्रस्त मज़दूरों से जो गलतियां होने संभावना हो सकती हैं वे

करोड़ों लोगों के विरोध के बावजूद सरकारें ऐसी नीतियां लागू करती हैं।

एक सहभागी ने इस बात पर ध्यान दिलाया कि मौजूदा व्यवस्था में सत्ता चंद्र पूंजीवादी घरानों के हाथों में संकेंद्रित है। वे ऐसी पार्टी को पैसा देते हैं जो जनता के कम से कम विरोध से उनके हित के कार्यक्रम को लागू कर सकती हों। इसलिए कोई भी पार्टी सत्ता में क्यों न हो, वे इन सभी पूंजीवादी घरानों के हित में ही काम करती हैं। कृषि कानून, भूमि अधिग्रहण कानून, श्रम कानूनों में बदलाव, ये सभी उन्हीं पूंजीवादी घरानों के कार्यक्रम के हिस्से हैं, जिसे वे विभिन्न पार्टियों को सत्ता में लाकर उनके द्वारा लागू करवाना चाहते हैं।

सार्वजनिक इकाइयों के पास भूमि
एक बहुत ही मूल्यवान संपत्ति है। एक
सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक हिन्दोस्तान में

मज़दूरों को लोगों के गुस्से का सामना भी करना पड़ता है। कभी—कभी उनके ऊपर शारीरिक हमले भी हुये हैं और कई मज़दूर जान से भी मारे गये हैं।

निजीकरण को धीरे-धीरे लागू किया जा रहा है। अभी कई सारे रेलवे के ज़ोनों में सिग्नल तथा टेलिकॉम यंत्रों का रखरखाव निजी कम्पनियों के हाथों में दे दिया गया है। वे पैसा तो ले लेती हैं लेकिन काम के लिए मजदूरों की नियुक्ति ही नहीं करती हैं, इसलिए रेल मजदूरों को ही यह काम भी करना पड़ता है, जिससे निश्चित तौर पर उनके ऊपर का बोझ बढ़ता है।

की मीटिंग की तैयारी में (फाइल फोटो) इससे बिल्कुल नहीं होंगी। लेकिन लगता नहीं कि अधिकारियों को इसके बारे में कोई भी परवाह है।

आने वाले दिनों में तो मज़दूरों की कमी की यह समस्या और गंभीर बन जायेगी जैसे—जैसे रेलगाड़ियों की गति बढ़ेगी और नई—नई तकनीकें आएंगी।

काम की अति असुरक्षित परिस्थिति में, केबल का रखरखाव तथा ख़राबी को ठीक करने का काम तो रेल की पटरी के कर्मियों की कमी और काम के बोझ में बहुत ज्यादा वृद्धि, यह इन मज़दूरों की सबसे बड़ी समस्या है। इंडियन रेलवे सिग्लन एंड टेलिकॉम मेन्टेनर्स यूनियन (आई.आर.एस.टी.एम.यू.) ने इसके बारे में विभिन्न स्तरों के अधिकारियों तक, अलग—अलग माध्यमों द्वारा यह बात पहुंचाई है। चक्रधरपुर, गांधीनगर, कोटा, इंदौर तथा बंदीकुर्ई स्टेशनों पर रेलवे बोर्ड के पूर्व प्रमुख (सी.आर.बी.), श्री अश्वनी लोहानी जी से मीटिंगें की गई हैं। इसके अलावा मज़दूरों की टीम ने दो बार पूर्व

पास ही करना पड़ता है। यह काम कितना ख़तरनाक है इसकी कल्पना यह जानकर मिल सकती है कि केवल, पिछले चार सालों में काम के दौरान 80 मज़दूरों की जानें चली गई हैं। वे 440 वोल्ट के सीधे लाइव सर्किट पर तथा 25,000 वोल्ट के ए.सी. सर्किट पर काम करते हैं। बहुत बार उन्हें सिग्नल पोस्ट पर बिजली के झटकों को झेलना पड़ता है।

सी.आर.बी. श्री विनोद यादव जी को अपनी सब समस्याओं से अवगत कराया था। नये सी.आर.बी. या रेलवे बोर्ड के सी.ई.ओ. श्री विनोद शर्मा जी से मीटिंग के लिए विनति की है। इसके अलावा वे ख़तरा तथा कठिनाई भत्ता हासिल करने की भी कोशिश कर रहे हैं। वे इस बात पर भी ज़ोर दे रहे हैं कि हर यूनिट के पास एक चार पहिये का वाहन होना चाहिए ताकि

जब सिग्नल के यंत्र ख़राब हो जाते हैं तब जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी उन्हें ठीक करने के लिए इन मज़दूरों के ऊपर अनेक प्रकार के अत्याधिक दबाव डाले जाते हैं। जिससे गलितयां होती हैं या काम चलाऊ काम ही हो पाता है। इसके बाद अगर कोई दुर्घटना होती है तो मज़दूरों को अपनी नौकरियां खोनी पड़ती हैं। बहुत बार ख़राबी स्थल पर पहुंचने के लिए इतना दबाव डाला जाता है कि मज़दूर दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं या कई बार मौत के शिकार भी हो जाते हैं। कई बार रेलगाड़ियों के चलने के बारे में उन्हें सूचना नहीं मिलती है जिसकी वजह से वे रेलगाड़ियों की चपेट में आ जाते हैं। और तो और ख़राबी के वक्त कभी—कभी ख़राबी के स्थान पर जल्दी से जल्दी पहुंचकर सुधारने का काम शीघ्रता से किया जा सके।

भारतीय रेल को न अपने मज़दूरों की सुरक्षा की कोई परवाह है और न ही यात्रियों की। वह रिक्त पदों पर भर्ती नहीं कर रही है और तो और खाली पदों को समाप्त किया जा रहा है। भारतीय रेल में बड़े पैमाने पर कुशल तथा अकुशल काम के लिए मज़दूरों को ठेके पर रखा जा रहा है। मौजूदा मज़दूरों की काम की हालतें बद से बदतर बनती जा रही हैं। इस बहुत ही ख़तरनाक रास्ते का विरोध करने में रेल मज़दूरों का समर्थन सभी मज़दूरों को करना चाहिए।

ताकृत कई गुना ज्यादा हो जाएगी। एक पर हमला सब पर हमला, इस भावना से लड़ने के सिवाय हमारे पास और कोई चारा नहीं है।

सभी वक्ताओं को तथा सहभागियों को धन्यवाद देते हुए का. मैथ्यू ने उन्हें श्रृंखला की अगली मीटिंग के लिए आमंत्रित किया, जो बिजली वितरण के निजीकरण के विरोध पर होगी।

<http://hindi.cgpi.org/20757>

एक निवेदन

पाठकों से निवेदन है कि मजदूर, किसान, महिला, नौजवान तथा समाज के हर मेहनतकश श्रेणी की जिंदगी और संघर्ष के बारे में लेख लिखकर भेजें। इससे देश के नव-निर्माण के लिये मजदूर-मेहनतकश की राजनीतिक एकता तथा संघर्ष मजबूत होगा।

To
.....
.....
.....
.....

RNI No.- 45893/86 Postal Regd. No. DL(S)-01/3177/2018-20
LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT. U (SE)-38/2018-20
Posting Date at NDPSO, 1 & 2 May, 2021 Date of publish - 1 May, 2021

स्वामी लोक आवाज़ पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक मध्यसूदन कस्तूरी की तरफ से, ई-392 संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस-2, नई दिल्ली 110020, से प्रकाशित। शुभम इंटरप्राइजेज, 260 प्रकाश मोहल्ला, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली 110065 से मुद्रित। संपादक—मध्यसूदन कस्तूरी, ई-392, संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस-2, नई दिल्ली 110020। email : melpaper@yahoo.com, mazdoorektalehar@gmail.com, Mob. 9810167911
अवितरित होने पर हस पते पर वापस भेजें : ई-392, संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस-2, नई दिल्ली 110020



WhatsApp
09868811998

ऐमज़ॉन की लूट और इजारेदारी के खिलाफ़ छोटे व्यापारियों का आंदोलन

15 अप्रैल को हिन्दोस्तान के लाखों छोटे व्यापारियों और व्यवसायियों ने ऐमज़ॉन डॉट कॉम जैसी बड़ी एकाधिकार वाली ई-कॉर्मस कंपनियों के खिलाफ़ एक धरना आयोजित किया था।

यह आंदोलन उसी समय पर आयोजित हुआ जिस दौरान ऐमज़ॉन का अप्रैल 15 से 18 के बीच "संभव" नाम का वार्षिक प्रचार कार्यक्रम ऑनलाइन किया जा रहा था। इस कार्यक्रम का आयोजन इस झूठ को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है कि ऐमज़ॉन छोटे व्यापारियों और स्टार्टअप का "मित्र और मार्गदर्शक" है और "छोटे व्यवसायों को ऑनलाइन विस्तार और बिक्री के अवसर प्रदान करता है।"

ऐमज़ॉन के कार्यक्रम का विरोध करते हुए आंदोलन द्वारा इस प्रदर्शन को "असंभव" नाम दिया गया था।

एक अरब 30 करोड़ आबादी वाले हिन्दोस्तानी खुदरा बाजार में बड़ी-बड़ी वैश्विक ई-कॉर्मस कंपनियों के प्रवेश के खिलाफ़, छोटे व्यापारी और दुकानदार पिछले दो सालों से लगातार आंदोलन कर रहे हैं। उन्होंने ऐमज़ॉन और इसकी प्रतियोगी वॉलमार्ट की मिलिकी की पिलपकार्ट जैसी बड़ी वैश्विक ई-कॉर्मस के एकाधिकार वाली कंपनियों पर प्लेटफॉर्म का ढोंग रचकर और विभिन्न तरीकों से हजारों छोटे दुकानदारों और खुदरा व्यापारियों की आजीविका को नष्ट करने का आरोप लगाया है। यह आंदोलन दुकानदारों और व्यापारियों द्वारा आयोजित किया गया सबसे हाल ही का एक उदाहरण है।

बड़ी वैश्विक ई-कॉर्मस वाली कंपनियों की आक्रामक नीतियों और गतिविधियों पर रोशनी डालने के लिए इस आंदोलन का आयोजन किया गया था। ये वैश्विक एकाधिकारी कंपनियां उनके प्लेटफॉर्म पर सामान बेचने वाली सैकड़ों छोटी कंपनियों पर मिलिकी या नियंत्रण रखती हैं। इसके बाद ऐसी कंपनियों के द्वारा, मूल ई-कॉर्मस वाली कंपनी स्मार्टफोन और अन्य लोकप्रिय सामान के उत्पादकों के साथ विशेष सौदे करती हैं, सामान के भाव को ऊपर—नीचे करने के लिये चालाकी के हथकंडे अपनाती हैं और ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए अपने प्लेटफॉर्म पर बेचे जाने वाले सामानों पर छूट प्रदान करती हैं।

इस साल फरवरी में प्रकाशित रॉयटर्स की एक विशेष रिपोर्ट में बताया गया है

पाठक वार्षिक ग्राहकी शुल्क सीधे हमारे बैंक खाते में भेजें

पाठक अपना वार्षिक ग्राहकी शुल्क (150 रुपये) सीधे हमारे बैंक खाते में जमा करके हमें इसकी सूचना नीचे दिये फोन, ईमेल या वाट्सएप पर अवश्य दें।

प्रति : लोक आवाज़ पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, नई दिल्ली कालका जी, खाता संख्या :- 20066800626

ब्रांच कोड :- 00974 न्यू दिल्ली कालका जी

आई.एफ.एस. कोड (IFSC Code) :- MAHB0000974

फोन : 9810187911, 9868811998 (वाट्सएप)

email : melpaper@yahoo.com, mazdoorektalehar@gmail.com



छोटे व्यापारियों द्वारा बड़ी ई-कॉर्मस कंपनियों के खिलाफ़ धरना (फाइल फोटो)

कि ऐमज़ॉन कई वर्षों से अपने हिन्दोस्तानी प्लेटफॉर्म पर कंपनियों के एक छोटे समूह का पक्ष लेते हुए उन्हें विशेष मौके दे रहा है। असलियत में, ये सभी कंपनियां इजारेदार पूँजीपतियों की मालिकी की हैं। ऐमज़ॉन ने इन कंपनियों के पूँजीवादी मालिक और हिन्दोस्तानी राज्य के साथ अपने करीबी के रिश्ते का फ़ायदा उठाते हुए विदेशी निवेश के नियमों को दरकिनार किया है।

यह बात गौर करने वाली है कि हिन्दोस्तान का एक सबसे बड़ा इजारेदार पूँजीपति घराना, यानी मुकेश अंबानी की अगुवाई वाली रिलायंस इंडस्ट्री, आज हिन्दोस्तान में बड़ी तेजी से ई-कॉर्मस के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। रिलायंस समूह फेसबुक के साथ सौदा कर रहा है। हिन्दोस्तानी खुदरा बाजार को लेकर विभिन्न बड़े ई-कॉर्मस वाली कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा बहुत तेज़ है। ऐमज़ॉन और रिलायंस एक कोर्ट केस में फंसे हुए हैं जिसमें ऐमज़ॉन रिलायंस द्वारा फ्यूचर ग्रुप के अधिग्रहण को रोकने की कोशिश कर रहा है। फ्यूचर ग्रुप फिलहाल हिन्दोस्तान का दूसरा सबसे बड़ा खुदरा व्यापारी है देशभर में जिसके 1700 से भी ज्यादा दुकानें हैं। इसमें बिंग बाजार, ईज़ी-डे, नीलगिरी, सेवन इलेवन और कई अन्य ब्रांड शामिल हैं।

कोविड-19 की महामारी और उसके बाद के लॉकडाउन की वजह से बड़ी वैश्विक

ई-कॉर्मस की इजारेदारी वाली कंपनियों जैसे कि ऐमज़ॉन की ऑनलाइन बिक्री में बहुत बढ़ाती हुई है। इस सबके परिणामस्वरूप छोटे दुकानदारों और व्यापारियों को जो

पहले से ही इन कंपनियों की आक्रामक और लुटेरी गतिविधियों से परेशान थे, उन पर और गहरा संकट आया है, जिसकी वजह से देशभर में सैकड़ों दुकानों को बंद करना पड़ा है। व्यापारियों और छोटे उत्पादकों का प्रतिनिधित्व करने वाले कई समूहों ने न्यायालय और राज्य के नियंत्रण वाले विभागों में याचिकायें दाखिल की हैं कि विदेशी निवेश के नियम दुबारा संशोधित किये जाने चाहिए और खुदरा व्यापार में इजारेदारी रखने वाली बड़ी कंपनियों के संचालन के लिये सख्त कानून बनाए जाने चाहिए।

विरोध प्रदर्शन के आयोजकों में ऑल इंडिया ऑनलाइन वेडर्स एसोसिएशन और ऑल इंडिया मोबाइल रिटेलर्स एसोसिएशन, हेल्पलेस अंगेस्ट हेल्पलेसनेस एंड एक्शन फॉर स्ट्रेसल (प्रहार) और कई अन्य छोटे उत्पादकों और व्यापारियों के समूह शामिल हैं।

आंदोलन में व्यापारियों द्वारा ऐमज़ॉन के निर्माता बेजोस, ऐमज़ॉन इंडिया के प्रमुख अमित अग्रवाल, हिन्दोस्तान के उसके व्यापारिक संझेदार — नारायण मूर्ति — जो इंफोसिस के अरबपति सह—संस्थापक हैं और वैश्विक ई-खुदरा व्यापार इजारेदारियों के अन्य उच्च प्रतिनिधियों को "असंभव" पुरस्कार दिया गया। ये सभी वे लोग हैं, जो व्यापारियों की आजीविका पर इस बड़े हमले के लिए ज़िम्मेदार हैं।

हिन्दोस्तानी राज्य सबसे बड़े हिन्दोस्तानी और विदेशी इजारेदार पूँजीवादी घरानों के हितों की रक्षा करता है और उन्हें आगे बढ़ाता है। छोटे उत्पादकों और व्यापारियों की मांग है कि सरकार उनके हितों की रक्षा करे।

<http://hindi.cgi.org/20762>

हमारे पाठकों से :
कानून बनाम किसान

कानून और किसान की राशि चाहे एक ही है...

मगर काम अलग—अलग हैं

बिल्कुल विपरीत

एक अगर पूरब है

तो दूसरा पछचम है...

कानून कहता है...

किसान तेरी हस्ती ही क्या है

तू...

मेरे अस्तित्व को दिखाएगा आंख झाड़ेगा अपना रौब मैं...

वासी हूं महलों का मैं...

करता हूं ऐश नोटों के गद्दों पर और मैं जब भी चाहूं

दबोच सकता हूं तेरी गर्दनें

मैं हूं...

पूँजीपतियों के घर की रौनक मैं हूं...

शाही दफ्तरों की शानो—शौकत तेरे जैसों पर जब भी चाहूं

चला सकता हूं कानूनी लट्ठ... मैं...

कानून हूं सबसे उत्तम

सबसे उपर

अडानी और अंबानी के

घर की कोर्ट...

किसान कहता है

बेशक मेरी कोई औकात नहीं

कोई रुतबा नहीं...

मगर नहीं चलेगी अब